RNI MAHMAR
36829-2010

ISSN- 2229-4929

Peer Reviewed

Akshar Wangmay

International Research Journal
UGC-CARE LISTED

Special Issue - II
Interdisciplinary View on Socio-Economic, Educational, Management, Environmental, Research, Language and Sustainable Development in Covid-19 Pandemic Situation

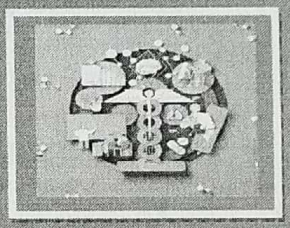

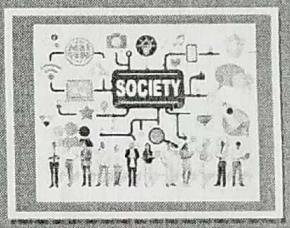

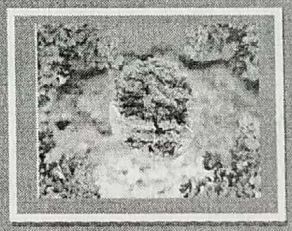

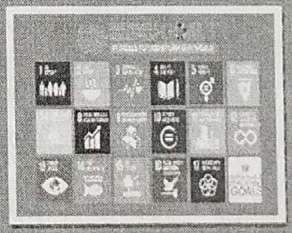

January 2021

Chief Editor : Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Executive Editor : Prof. Kartik R. Patil

Principal,
Rashtrasant Tukdoji College, Chimur
Ta-Chimur, Dist-Chandrapur (Maharashtra)

Co-Editor : P. M. Rajurwade

Address
'Pranav', Rukmenagar,
Thodga Road, Ahmadpur, Dist- Latur 413515 (MS)

Scanned with OKEN Scanner

24	Between Hope and Hopelessness; The Study Of Shafi's Ahmed's "The half widow" **Navreen Khaliq**	84-86
25	Position of Indian Auto Ancillary Industry in Indian Market **Shri. Yamanappa C. Kelageri**	87-90
26	Financial Literacy- Greater Life Sill For Empowerment of Women **Suresh G**	91-93
27	Reservation Policy in Higher Education Institutions: A Study in Response and Outcomes **Anupam Yadav**	94-96
28	Minakshi Sane: Voice of Voiceless People **Dr. Prabhakar Nagnath Kolekar**	97-100
29	Sustainable Household Livelihood Security Index (Methodological Review of SHLSI) **Prakash Vhankade**	101-106
30	Water Pollution : Causes And Remedies **S. Manjula**	107-109
31	Impact of Covid – 19 on Indian Economy **K. Bhavani**	110-113
32	The Battleground Of Digital Privacy Amidst Covid -19 Pandemic And The Aarogya Setu App-An Appraisal **Nanditha .V. Nair, Dr. Aejaz U. Shaikh**	114-116
33	A Geographical Study of NPK Status in Soil of Sangli District Maharashtra **Mr. More Amol Vilas, Dr. P. V. Patil**	117-119
34	An analysis lockdown on salaried employees of private sector of Ramchandra Nagar, Dombivli **Mr. Shrinivas R. Aiyar, Dr. Manikandan N. Iyer**	120-122
35	Stress Among Students In Virtual Classroom During Covid-19 **Dr. Swati H. Kekare**	123-124
36	A Geographical Analysis of Land Use Pattern in Maharashtra State **Dr. H. B. Tipe, Santosh P Mane**	125-127
37	A Comparative Study of Work Culture and Environment Among Marathi Medium and English Medium Primary Schools in Satara District **Mr. Borate Santosh Dashrath, Dr. Mrs. Dakle Sunita P.**	128-131
38	कोरोना काळात समाजासाठी योगाचे महत्त्व प्रा. डॉ. उदय. दा. मेंडुलकर	132-134
39	उच्च शिक्षणात ग्रंथालयाची भुमिका प्रा.डॉ.तोटे दादासाहेब सर्जेराव	135-136
40	हिंदी कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श डॉ. योगिता दत्तात्रय घुमरे	137-138
41	आभासी शिक्षणाचे फायदे व तोटे प्रा. डॉ. दिलीप पोंगडे	139-141
42	कोविड-19 विषाणुचा भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील परिणाम डॉ. नितेश रामदास बोरकर	142-144
43	आगामी मुंबई महानगरपालिका निवडणूकीसाठी शिवसेनेची बदलती रणनीतीक भूमिक शरद बाबुराव सोनवणे	145-147
44	पर्यावरणीय संकट आणि गांधी विचार डॉ. हनुमंत कुरकुटे	148-149
45	हिमलाट पहाटे पहा जगावरी आली ! *(जगभर थैमान घालणाऱ्या कोरोना विषाणूमुळेअस्थिर सद्यस्थितीत कुसुमाग्रजांच्याकवितेची कालातीतता प्रत्ययास येणे सहाजिकच आहे.)* प्रा. डॉ. विजय रूपराव राऊत	150-152
46	वर्तमान संदर्भ में किसान और मैथिलीशरण गुप्त का काव्य ('किसान'काव्य के संदर्भ में) डॉ. मीनाक्षी विनायक कुरणे	153-154
47	कोविड 19 चा भारताच्या शैक्षणिक प्रशासनावर पडलेला प्रभाव डॉ. प्रवीण पांडुरंगराव लोणारकर	155-157

Scanned with OKEN Scanner

'Akshar Wangmay' UGC Care Listed, International Research Journal, ISSN: 2229-4929, January 2021
Special Issue, Volume-II "*Interdisciplinary View on Socio-Economic, Educational, Management, Environmental, Research, Language and Sustainable Development in Covid-19 Pandemic Situation*"

हिंदी कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श

डॉ. योगिता दत्तात्रय घुमरे
महात्मा गांधी विद्यामंदिर संचलित श्रीमती पुष्पाताई हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महिला. महाविद्यालय, मालेगांव केम्प् तह.मालेगांव, जि. नासिक (महाराष्ट्र)

भूमिका :

लगभग 20 वी सदी के बाद भारत में अनेक नए सामाजिक आंदोलनो का उगम हुआ। जिनमें स्त्री, दलित, किसान, आदिवासी आदियों ने अपने अस्तित्व और अधिकारों के लिए संघर्ष किया। अपना अस्तित्व एवं अस्मिता ढूँढने का प्रयास किया इसे ही विमर्श कहा गया। स्त्रीविमर्श और दलित विमर्श उसी का प्रतिफल है। अब- आदिवासी चेतना भी साहित्य में प्रस्तापित हुई है। साहित्य द्वारा आदिवासी विमर्श को अब एक नयी दिशा प्राप्त हुई है। संपूर्ण भारत के हर एक क्षेत्र में आदिवासी जनजाती है। लेकिन इन जनजातियों के साथ सामाजिक, राजनीतिक या आर्थिक पक्षपात होता है, इसी पक्षपात के शिकार हो रहे आदिवासी अपने अधिकारों की मांग करते हुए साहित्य में स्पष्ट हो रहे है। अपने जलजंगल-, जमीन से बेदखल महानगरों मे शोषित उपेक्षित आदिवासियों के सामने अस्तित्व की चुनौती खडी करदी है। जो लोग आदिवासी इलाकों में बच गए वे सरकार और उग्र वामपंथ की दोहरी हिंसा में फंसे है। अन्यत्र बसे आदिवासियों की स्थिति भी कुछ अच्छी नहीं है। आदिवासियों की पहचान उनकी भाषा, संस्कृति कहीं खोती जा रही है। आज आदिवासी अस्मिता और अस्तित्व का गहरा संकट उत्पन्न हो रहा है। साहित्य द्वारा इसका विरोध किया गया है और उसीसे समकालीन आदिवासी साहित्य अस्तित्व में आयासमकालीन आदिवासी लेखन और विमर्श की शुरुवात नव्वद के| बाद माननी चाहिए। आदिवासी जनजातियों की स्थिति देखकर आदिवासी लेखक और गैर आदिवासी लेखकों ने समाज के सन्मुख आदिवासियों की व्यथा, संस्कृती, चित्रण, लोकगीत, आदि का चित्रण लेखन के माध्यम से किया।

आदिवासी विमर्श और साहित्य- आदिवासी विमर्श को केन्द्र में रखकर लिखनेवाले साहित्यकारों में रामदयाल मुण्डा, महादेव टोप्पों, रोज केरकेट्टा, निर्मला पुतुल, ग्रेस कुजुर, अनुज लुगुन आदि आदिवासी साहित्यकारों ने आदिवासी समाज के संस्कृति के उदात्त पक्ष को कविताओं द्वारा प्रस्तुत किया। बगैर आदिवासी लेखकों मे मैत्रेयी पुष्पा, संजीव कुमार, महाश्वेता देवी, रमणिका गुप्ता, हिमांशु जोशी, राकेश वत्स, शिवप्रसाद सिंह, मृणाल पाण्डे, राजेंद्र अवस्थी, मेहरुन्निसा परवेझ आदि नाम उल्लेखनीय है। इन्होंने आदिवासी जनजातियों के आँचलिकता पर उपन्यास लिखे।

अवस्थी का उपन्यास सूज किरण की छाँव" (1959), "कलपी', "चित्रकूट' में आदिवासी क्षेत्र बस्तर और बुंदेलखंड का आंचलिक जीवन स्पष्ट हुआ है और एक उपन्यास "जंगल के फूल इसमें आदिवासी क्षेत्र का संवेदनात्मक चित्रण स्पष्ट हुआ है।

कथाकार संजीव जी के उपन्यासों मे आदिवासियों के जीवन, रहनसहन-, खान पान वेशभूषा, संस्कृति, त्यौहार पर्व, भाषा आदि का चित्रण स्पष्ट हुआ है। 'किसन गढ की अहेरी', 'सावधाननीचे आग है !', 'धार', 'सर्कस', 'पॉव तले की दूब', 'जंगल जहाँ शुरु होता है, 'सूत्रधार' आदि। संजीव जी के इन उपन्यासों में आदिवासी संस्कृति एवं परंपराओं का चित्रण स्पष्टदृष्टिगोचर होता है। : 'पॉव तले की दूब' इस उपन्यास में मेझिया इस क्षेत्र में रहनेवाले आदिवासियों के जीवन की विसंगतियों का चित्रण उभरा है। इस समुदाय में उत्सव प्रियता अधिक है। कमाने के साधन अधिक न होने के कारण इनका जीवन कठिण है। अभाव ग्रस्त जीवन होते हुए भी यह लोग उत्सवप्रिय है। उत्सवों में नाच गाना, मॉस खाना, शराब पीना उन्हे पंसद है। संजीव जी का कहना है कि, "आदिवासी लोगों की दो कमजोर नसे है, अरण्यमुखी संस्कृति उन्हे सभ्यता के विकास से जुडने नहीं देती और उत्सवधर्मिता इन्हें कंगाल बनाती है। हंडिया या दारु ये पीएँगे ही और उत्सव को मस्त होकर मनाएँगे।"। इसप्रकार यहाँ आदिवासी जनसमुदाय की कमजोर नसों की समस्याओं को स्पष्ट किया गया है। संजीव जी के धार" इस उपन्यास में आदिवासी समुदाय के खानपान का परिच-य मिलता है। संथाल जाति के आदिवासियों का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में किया गया है। आदिवासी शिकार करने में बहुत ही माहिर होते है। इसी से संबंधित संजीव लिखते हैवे बिना कोई शब्द किये " - नाल को उठाते और डाल पर बैठे परिन्दे के पेट में खुभों देते। इस अजीबो गरीब शिकार में उन्होंने तेरह बगुले, सात सारस, आठ मैनाए मारी। टिपका ने बिल में एक लोमडी भी।"2 इस प्रकार उनके शिकार करने की कला का वर्णन किया गया है। इस उपन्यास में संथाल जाती का वर्णन है, बॉसगडा के आदिवासी अपना जीवन त्यौहार पर्व मनाकर खुशी व्यतीत करते है। उत्सव मनाना और उसमें नाचगाना-, मांस खान, शराब पीना आदि को वे अपना अधिकार समझते है। मृत्यु होने पर श्राद्ध भोजन की पद्धति का भी वर्णन उल्लेखनिय है। इस प्रकार संजीव ठाकूर के अन्य उपन्यासों में भी आदिवासी पर्व त्यौहार, लोकसंस्कृति, रीति रिवाज, संस्कार आदियों का वर्णन किया गया है।

जंगल' जहाँ शुरु होता है इस उपन्यास में थारु आदिवासियों का जीवन उन पर जमींदार, डाकू, पुलिस, नेता आदि अन्याय-अत्याचार का यथार्थ दस्तावेज है। ऐसी कौन सी मजबूरी है कि अहिंसा के पूजक गौतम बुद्ध के शाक्य वंशज थारु हिंसा का मार्ग अपनाते है उसका उत्तर यह उपन्यास है। उपन्यास में आदिवासियों का शोषण चरमसीमा तक है। डाकू की समस्या केंद्र में है। मालिक और पुलिस दोनों मिलकर उनका शोषण करते है। मालिक और डाकू मनचाही औरत को उठाकर ले जाते है। पुलिस इन्हें डाकूओं से मिला समझकर मनचाहा शोषण अन्याय अत्याचार करती है। थारु आदिवासी डाकूओं से अधिक पुलिस से शोषित है। पुलिस के कहर से कई सारे आदिवासी गॉव छोडकर भाग गए है। यहाँ पर जंगल ही केंद्रीय पात्र है। जंगल की व्यवस्था को उपन्यास में स्पष्ट किया है।

Scanned with OKEN Scanner

मैत्रयी पुष्पा का अल्मा कबूतरी' उपन्यास आदिवासी कबूतरा जाति पर उनके जनजीवन पर आधारित है। लेखिका ने इस उपन्यास लेखन हेतू बुंदेलखंड के आदिवासी कबूतरा जाति के डेरों में रहकर अध्ययन किया। कई सालों तक इस समाज की संस्कृति एवं परंपराओं संबंधी शोध कार्य किया और तब जाकर उपन्यास कथा निर्माण हुआ। जल, जमीन, जंगलए आकाश और हवा के आजाद इस्तमाल से वंचित समाज का आइना प्रस्तुत उपन्यास है।

हिंदी के आँचलिक उपन्यासों में भी उपन्यासकारों ने इस हाशिए के समाज का चित्रण किया है। राजेंद्र अवस्थी का जंगल के ' फूल' इस उपन्यास में मध्य प्रदेश के बस्तर क्षेत्र के सघन वनों तथा नदी नालों से हरीभरी घाटियों के बीच रहनेवाली गौड जाति का चित्रण है। आज भी यह जाति आदिम सभ्यता में ही जी रही है। पुराने रीतिअब तक यहाँ के निवासी शहरी" रीवाज को ही अपनाए हुए है।- सभ्यता से काफी दूर है, उन्हों ने अपनी प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर को अछूते कौमार्य की भाँति सुरक्षित रखा है।"4 इस जनजाति की डोर मुखिया के हाथ में

है। मुखिया जैसा दंड दे उन्हे स्वीकार करना पडता है। पूरे गॉव को उसके इशारे पर नाचना पडता है। राजेंद्र अवस्थी ने सूरज किरण की छॉव"' में बस्तर के गौडों समाज के आचार विचार, रुढि परंपरा, सांस्कृतिक सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश को स्पष्ट किया है।

योगेन्द्र सिन्हा के उपन्यास वन में मन में" "हो' जनजाति के सामाजिक जीवन का चित्रण मिलता है। यह जनजाति आज की शहरी सभ्यता से बहुत दूर

है। उन्होंने अपने रीतिरिवाज को संभालने में ही धन्यता मानी है।-

देवेंद्र सत्यार्थी के उपन्यास रथ के पहिए" में करंजिया इस आदिवासी गॉव के दो शिक्षित युवकों की कथा है। आनंद और सोम शिक्षित होकर आते है और अपने पिछडे हुए समाज में परिवर्तन लाना चाहते है।

वीरेंद्र जैन का पार"' उपन्यास आदिवासियों के विस्थापन के शोषण की समस्या दर्शाता है। इस उपन्यास में विस्थापित आदिवासियों के शोषण, अत्याचार, अन्याय, भुखमरी का करुण चित्रण है। आधुनिक तकनिकों की अनभिज्ञता एवं अंधश्रद्धा और रुढीप्रियता के कारण आदिवासी किस प्रकार शोषण के बलि चढाए जाते है, उनके साथ निर्मम व्यवहार होता है, यह उपन्यास द्वारा स्पष्ट किया गया हैजिस" - जमीन पर वर्षों की मेहनत पर पानी फिर जाएगा? ऐसा सपने में भी न सोचा, सहरिया कौम के साथ पता नही कब से इसी तरह निर्मम व्यवहार होता रहा है।"5 आदिवासियों को अपने अधिकारों से वंचित किया जा रहा है, परियोजनाओं के लिए विस्थापित किए गए आदिवासियों के घर बर्बाद हो रहे है।

वीरेंद्र जैन द्वारा लिखित डूब"' उपन्यास भी विस्थापन की समस्या को स्पष्ट करता है। "यह उपन्यास उन हजारों आदिवासी गॉवो की दास्तान को प्रस्तुत करता है, जिनके घर, खेत खलिहान, जल, जंगल, जमीन, प्रथाएँ, मान्यताएँ, रीतिरिवाज-, परंपरा उनसे छिन गए अर्थात उन्हें इन चीजों से बेदखल कर दिया है।"6

रणेन्द्र ने ग्लोबल गॉव के देवता" और गायब होता देश" जैसे प्रभावी उपन्यास लिखे जिसमें विस्थापन प्रक्रिया को झेलनेवाले जीवनसंघर्ष को सहनेवाले- आदिवासियों की व्यथा है।

निष्कर्ष : आदिवासी साहित्य संघर्ष रत जीवन वादी साहित्य है। इसमें आदिवासियों को अपने ही जल, जंगल, जमीन से बेदखल करने की दास्ता है। इस बेदखल करनेवाली सभ्यता के प्रति विरोध की दास्ता है। आदिवासी विमर्श आदिवासियों के अस्तित्व को बचाने का एक माध्यम है। आदिवासी अपने अस्तित्व के लिए लढ रहे है, अब आदिवासी विमर्श भी चेतना का विषय बन गयी है। साहित्यकारों ने अपने लेखन द्वारा आदिवासियों की त्रासदी को चित्रित किया। अनेक आदिवासी साहित्यकार भी अब समाज के सामने आ रहे है। कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना आदियों के माध्यम से आदिवासी साहित्य समृद्ध कर रहे है। आदिवासियों की पीडा, संघर्ष, अस्मिता के लिए संघर्ष लेखन द्वारा समाज के सामने लाने का प्रयास कर रहे है। आदिवासी लेखन करनेवाले साहित्यकारों के कारण ही हाशिए के समाज का चित्रण समाज के आगे प्रस्तुत हुआ है। आदिवासी अपनी संस्कृति, सभ्यता, त्यौहार पर्व आदि को बचाने में ही धन्यता मानते है। अंधविश्वास इनकी अधोगति का प्रमुखतकारण है। वे अपने संसाधनों को बचाने में व्यस्त : है। स्पष्ट है कि आदिवासी विमर्श आदिवासियों की पीडा, दर्द, व्यथा एवं शोषण के विरोध में की गई नव चेतना का अध्ययन है।

संदर्भ -:

1) संजीव, पॉव तले की दूब, पृ .11
2) संजीव, धार, पृ .53
3) डॉभगवान गव्हाडे ., डॉहेमंत सोनाले ., समकालीन हिंदी साहित्य विविध
विमर्श से उद्धृत .पृ ,19
4) राजेंद्र अवस्थी, जंगल के फूल, आमुख में
5) वीरेंद्र जैन, पार, पृ .120
6) डॉश्रवणकुमार मीना ., समकालीन विमर्श विविध परिदृश्य :, पृ .51

Scanned with OKEN Scanner